

जैन पारिस्थितिकीय नीति – शास्त्र

—डॉ. सोहनलाल गाँधी

सारा विश्व दो विषम परिस्थितियों से जूझ रहा है – पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय अवक्रमण अथवा ह्रास । पर्यावरणीय अवक्रमण से तात्पर्य प्रदूषण का फैलाव, वनों का क्रमशः संकुचन, ग्रीनहाऊस गैसेज का अत्यधिक मात्रा में उत्सर्जन, जलवायु परिवर्तन, वन्य जीवों के अस्तित्व पर संकट, नदियों का गंदे नालों में परिवर्तित होना, झीलों, तालाबों तथा बावड़ियों का सूखना, अतिवृष्टि, सूखा आदि गम्भीर समस्याओं से है जिससे मानव जीवन निरंतर कष्टप्रद होता जा रहा है । इसका एकमात्र कारण अनसस्टेनेबल डेवलपमेंट (अधारणीय विकास) ऐसा विकास जिसमें विकास कम एवं विनाश कई गुना हो । जहाँ एक ओर हम प्रदूषित हवा— पानी तथा कैंसर जैसे असाध्य रोगों के कारण प्रत्येक क्षण अकाल मृत्यु की ओर अग्रसर हैं तो क्रमशः नष्ट होती जैव—विविधता के कारण हमारा रक्षा कवच नष्ट हो रहा है । पारिस्थितिकी विज्ञान मनुष्यों में घटती पारस्परिक समरसता के खतरों की व्याख्या करता है । मनुष्य की जीवनशैली में बढ़ती हिंसा के कारण पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी दोनों क्रमशः नष्ट हो रहे हैं । पारिस्थितिकी का नीति – शास्त्र जीवन—मूल्यों पर टिकी पारस्परिक रिश्तों की डोर की गुणवत्ता पर प्रश्नचिन्ह लगा रहा है । पारिस्थितिकी विज्ञान मनुष्य का समाज और प्रकृति के साथ समरस सम्बन्धों पर बल देता है जो आधारणीय विकास के कारण कलहपूर्ण हो गए हैं । आज से 2500 वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने मनुष्य को चेताया था य किन्तु उसने महावीर की चेतावनी को सुना—अनसुना कर दिया ।

भगवान महावीर सूक्ष्मदर्शी थे । उन्होंने पृथ्वी पर विद्यमान सभी पदार्थों जीव— अजीव – दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया । अजीव जीव का सहयोगी है, उसके बिना उसका जीवन अत्यधिक कष्टप्रद हो सकता है । धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय ये चार अजीवकाय हैं । अजीव शब्द जीव शब्द का निषेधपरक है, जो जीव नहीं है, वह अजीव है । उपयोग को जीव का लक्षण कहा गया है, वह जिसमें नहीं पाया जाता, वह अजीव है । जीव भी द्रव्य है । अन्य द्रव्यों से जीव द्रव्य स्वतंत्र है । धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल, जीव इन पाँचों द्रव्यों को काया वाला (सशरीर) कहा गया है । अर्थात् वे बहुप्रदेशीय हैं । इनमें असंख्य प्रदेश होते हैं । लोक छह द्रव्यों का पिण्ड है । लोकाकाश का ऐसा एक भी प्रदेश नहीं है जहाँ छह द्रव्य नहीं हों ।

संसार का जीवन सम्बन्धी समग्र व्यवहार पुद्गलों पर अवलम्बित है । जीव भी दो प्रकार के हैं— त्रस एवं स्थावर । पृथ्वी, अग्नि, पानी, वायु एवं वनस्पति सब जीवों के पिण्ड हैं सब स्वतंत्र आत्माएँ हैं । वे विकसित होते हैं, परिपक्व होकर मर जाते हैं किन्तु वे स्वेच्छा से चल—फिर नहीं सकते । सामान्यतः वे ही प्रकृति हैं । सब जीव बराबर हैं, प्रत्येक जीव जीना चाहता है, अतः किसी भी जीव का, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, हत्या करना पाप है । जैन दर्शन का एक पारिस्थितिकीय सूत्र है परस्पोपग्रहोजीवानाम् परस्पर सहायक होना यह जीवों

का उपकार है । सब जीव परस्पर निर्भर हैं। मनुष्य का मनुष्य के साथ कैसा सम्बन्ध हो, मनुष्य का अन्य प्राणियों के साथ कैसा सम्बन्ध हो, मनुष्य का वनस्पति के साथ कैसा सम्बन्ध हो भगवान महावीर ने इसकी विस्तृत व्याख्या की है । यही पारिस्थितिकी का नीति-शास्त्र है । इन सारे सम्बन्धों का आधार संयम है ।

महावीर ने कहा – ‘हे मनुष्य ! तुम अकेले नहीं हो, चारों ओर सूक्ष्म जीवों से घिरे हुए हो, अतः चलते वक्त बोलते वक्त जागरूक रहो, सावधान रहो, कहीं जाने-अनजाने तुम्हारी असंयमित प्रवृत्तियों के कारण सूक्ष्म जीव नष्ट तो नहीं हो रहे हैं ? पारिस्थितिकीय संतुलन में उनकी आवश्यकता हैय अतः अनावश्यक जीव हिंसा से बचो ।’ वे कहते हैं – ‘जो पृथ्वी, वायु, अग्नि, पानी एवं वनस्पति के अस्तित्व की अवहेलना करता है, या उनके अस्तित्व को अस्वीकार करता है, वह अपने स्वयं के अस्तित्व को अस्वीकार करता है ।’ इस्लाम एवं इसाई धर्म मनुष्य के अलावा अन्य किसी भी प्राणी में आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते । जैन धर्म जैव-विविधता को पारिस्थितिकीय संतुलन के लिए न केवल आवश्यक मानता हैय अपितु उसके अन्धाधुन्ध दोहन का भी निषेध करता है। जैन पारिस्थितिकीय नीति – शास्त्र कहता है इस पृथ्वी पर सभी जीवों को जीने का समान अधिकार है । गृहस्थ के लिए पूर्ण अहिंसा सम्भव नहीं है ; अतः उसे अनावश्यक हिंसा से बचना चाहिए । भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित पाँच महाव्रत तथा बारह अणुव्रत ही जैन पारिस्थितिकी हैं । उसका नवनीत है – पृथ्वी के सभी प्राणियों के प्रति मैत्री एवं आदर का भाव । जीव के सभी छह निकायों – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति एवं त्रस जीव (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुररिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय) की मन, वचन एवं कर्म से अनावश्यक हिंसा न करने का संकल्प ही तृतीय सहस्राब्दि में हमारे अस्तित्व को बचा सकता है ।

जब हम पारिस्थितिकी की चर्चा करते हैं तो प्रख्यात आधुनिक पारिस्थितिकी दार्शनिक (इको फिलोसोफर) आर्ने नेस का उल्लेख किए बिना, चर्चा अधूरी ही मानी जायेगी । आर्ने नेस ने शायद ही जैन धर्म के बारे में कभी सुना होगा । उन्होंने नार्वे की बर्फ से ढंके पहाड़ों की तलहटी में एक केबिन का निर्माण करवाया, जो बाद में श्विलडरनेस केबिनश के नाम से ख्यात हुई । उन्होंने इस केबिन में दस वर्ष व्यतीत किए । सभ्यता से कोसों दूर इस नीरव स्थान पर उन्होंने प्रकृति पर चिंतन किया और जो बोधि उन्हें प्राप्त हुई, उन्होंने विजडम ऑफ डीप इकोलॉजी (गहन पारिस्थितिकी – प्रज्ञा) शीर्षक से लिखी पुस्तक में लिपिबद्ध किया पारिस्थितिकी के क्षेत्र में दुनिया ने इसे एक अपूर्व क्रांतिकारी सोच बताया । उन्होंने डीप इकोलॉजी के आठ सिद्धान्त प्रतिपादित किए –

1. मनुष्य और गैर मनुष्य (पैड़-पौधे, सूक्ष्म जीव, पशु-पक्षी आदि) दोनों एक साथ फलें – फूलें । अर्थात् मनुष्य के साथ-साथ पृथ्वी पर विद्यमान सभी निकायों के जीव भी फलें – फूलें । ‘नॉन ह्यूमन्स लाइफ फॉर्मस’ स्वतंत्र है ।
2. विभिन्न जीवों की विविधता एवं उनकी समृद्धि भी अपने आप में जीवन – मूल्य हैं ।

3. मनुष्य को इस जैव-वैविध्य की विपुलता को कम करने या नष्ट करने का कोई अधिकार नहीं है ।
4. मानव जीवन के फलने-फूलने की अनुकूलता मानव जाति की आबादी में अत्यधिक कमी करने पर निर्भर है । अर्थात् गैर मनुष्यों का फलना-फूलना मानव जाति की आबादी को कम करने में ही निहित है ।
5. मानव जाति का गैर-मानव जगत में अत्यधिक हस्तक्षेप है, इससे स्थिति बद से बदतर हो रही है ।
6. उपरोक्त बिन्दुओं के सन्दर्भ में हमारी नीतियों को हमें बदलना होगा ।
7. जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की अपेक्षा जीवन की न्यूनतम गुणवत्ता के प्रति हमारा प्रशंसा का भाव होना आवश्यक है ।
8. उपरोक्त आधार पर आवश्यक परिवर्तनों के लिए सब की सहभागिता आवश्यक है ।

आर्ने नेस ने यह ज्ञान प्रकृति की गोद में बैठकर प्राप्त किया था। भगवान महावीर का पारिस्थितिकीय दर्शन आर्ने नेस के दर्शन से कई गुणा गहन है । जैन धर्म के अनुयायी अभी भगवान महावीर के उपदेश लोगों तक नहीं पहुँचा पाए हैं । हम लोग मन्दिरों एवं कर्मकाण्डों तक सिमटते जा रहे हैं । आधुनिक दार्शनिक हेनरी डेविड थोरो ने भी जीवन की सत्यता को जानने के लिए दो वर्ष तक एकान्तवास किया था और जो सिद्धान्त उन्होंने प्रतिपादित किए, वे जैन दर्शन के सिद्धान्तों से बहुत मेल खाते हैं। आज हमें यह सब जानने समझने और इनका तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता है, तभी हम जान सकेंगे कि पारिस्थितिकीय संतुलन को हम किस प्रकार मानव के अधारणीय विकास (सस्टेनेबल डेवलेपमेंट) से जोड़ सकते हैं।